IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 11, November 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.111116 |

चंद्रकांता के साहित्य में सांस्कृतिक जीवन

[1]Ajay Kumar Gaud & [2]Abhishek Mishra

[1]Research Scholar, Dept. of Hindi, Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University, Gorakhpur, India

[2]Co-Guide, Dept. of Hindi, Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University, Gorakhpur, India

सार

चंद्रकांता के लेखन का प्रारंभ १९६६ से हुआ जब उनकी पहली कहानी 'खून के रेशे' कल्पना में प्रकाशित हुई। आठ साल बाद उनका पहला कहानी संग्रह 'सलाखों के पीछे' प्रकाशित हुआ। इसके छे साल बाद उनका पहला उपन्यास 'अर्थान्तर' प्रकाशित हुआ। वे दो सौ से अधिक कहानियों की रचना कर चुकी हैं। उनकी कहानियों के १३ संग्रह, ७ उपन्यास और १ कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें 'पोशनूल की वापसी', 'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'यहां वितस्ता बहती है' तथा 'अपने अपने कोणार्क' काफी चर्चित रहे।कश्मीर की केसरी आबोहवा में पली बढ़ी चंद्रकांता की कहानियों में वहां की सभ्यता और संस्कृति का अंदाज सहज समाया हुआ है। वे वहां के लोक और लोक संस्कृति की गहरी पहचान रखती हैं और उनकी लेखनी इसे मर्मभेदी सफलता के साथ व्यक्त करती है।आज के दौर की सुप्रसिद्ध कथा लेखिका चंद्रकांता का २००१ में प्रकाशित उपन्यास 'कथा सतीसर', कश्मीर के वृहत्तर इतिहास के बेबाक चित्रण के लिये जाना जाता है। इसके लिए चंद्रकांता को २००५ में बिड़ला फाउंडेशन के 'व्यास सम्मान' से विभूषित किया गया है। उनकी रचनाओं के विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

परिचय

चंद्रकांता (जन्म- 1938, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर) हिन्दी भाषा की आधुनिक कहानीकार व उपन्यासकार हैं। कश्मीरी पंडित परिवार से ताल्लुक रखने वाली चंद्रकांता जी की पहली कहानी वर्ष 1966 में 'खून के रेशे' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी। कश्मीर की आवोहवा में पली बढ़ी चंद्रकांता की रचनाओं में कश्मीरियत और कश्मीरी होने के दर्द, दोनों की झलक स्पष्ट रूप से मिलती है। चन्द्रकान्ता (जन्म 3 सितंबर 1938) हिन्दी की विख्यात लेखिका हैं। 'कथा सतीसर' उनका सबसे विख्यात उपन्यास है।

श्रीमती चन्द्रकान्ता का जन्म श्रीनगर में हुआ था। उनके पिता का नाम प्रो. रामचंद्र पंडित था जो अंग्रेजी के शिक्षक थे। पिता को कश्मीर में हिंदी भाषा को बचाने के लिए मुहिम चलाते देखकर उनके मन में राष्ट्रभाषा के लिए सम्मान जागा और वे भी पिता की इस मुहिम में जुट गईं। हिंदी से एमए करने के बाद राजस्थान, हैदराबाद, उत्तर प्रदेश और हरियाणा सहित कई राज्यों में भाषा को बचाने के लिए संस्थाएं बनाईं।[1]

अब तक चंद्रकांता जी के 13 कहानी संग्रह, पाँच कथा संकलन, आठ उपन्यास, एक कविता संग्रह के अलावा दो संस्मरण प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं-

1. हाशिए की इबारतें'
2. 'कथा सतीसर'
3. 'पोशनूल की वापसी'
4. 'ऐलान गली जिंदा है'
5. 'यहाँ वितस्ता बहती'
6. 'अपने अपने कोणार्क'

पुरस्कार व सम्मान

चंद्रकांता जी को 'व्यास सम्मान' (2005) सहित अन्य कई सम्मानों से भी नवाजा जा चुका है। प्रतिष्ठित 'व्यास सम्मान' के अलावा हिंदी अकादमी, दिल्ली; हरियाणा साहित्य अकादमी, भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा अनेक पुस्तकें पुरस्कृत। रामचंद्र शुक्ल संस्थान वाराणसी, वाग्देवी पुरस्कार आदि एक दर्जन से अधिक अन्य पुरस्कार-सम्मान। 50 से अधिक शोधकार्य

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.111116 |

संपन्न; दूरदर्शन तथा आकाशवाणी से अनेक धारावाहिक एवं कहानियों का प्रसारण। पचास छात्र-छात्राओं ने समग्र साहित्य पर शोध किया/ कर रहीं हैं।

चन्द्रकान्ता अपने उपन्यास 'ऐलान गली ज़िन्दा है' में लिखती हैं- "फागुन में शिवरात्रि के मौके पर थोड़ा सा फर्क आ जाता..... फिर भी 'शिवरात्रि' पंद्रह दिन धूम-धड़ाके से मनती।.... एक तो शिवरात्रि' उस पर सलाम के दिन ईद। दोनों उत्सवों पर मेल-मिलाप और मुबारकबाद देने की प्रथा को बरकरार रखना जरुरी था।"[2] यही मुबारकबाद देने की जरुरी प्रथा, आधार बनी उस कश्मीरियत की जिसके छाँव तले दोनों समुदाय के लोग सदियों तक एकता के सूत्र में बंधे रहे और सामाजिक सौहार्द को बनाये रखा। हिन्दू, सिक्ख, बौद्ध या फिर मुसलमान किसी भी धर्म के लोगों का त्यौहार क्यों न हो उसमें सभी शामिल होते और एक दूसरे से प्रेम से मिलते तथा बधाइयाँ दी जाती। सभी एक दूसरे के दुःख-सुख में शामिल होते।

कश्मीर में ऋषि और सूफियों की सांझी परम्परा रही है। इन्हीं के साथ शैव और बौद्ध दर्शन का प्रभाव भी यहाँ के जनमानस पर पड़ा। सभी धर्मों के लोग सह-अस्तित्व की भावना के साथ रहते चले आये थे। कश्मीरियों ने अपने-अपने धर्म का सम्मान करते हुए भी कभी धार्मिक कट्टरता को अपने मध्य आने नहीं दिया। इसी सामाजिक सौहार्द को चन्द्रकान्ता अपने उपन्यास 'कथा सतीसर' में व्यक्त करते हुए लिखती हैं-"छोटा आदमी हो या बड़ा 'सलाम' के दीन बधाई देने वालों के हाथों में अपनी हैसियत के अनुसार दान दक्षिणा जरुर देगा। सलाम तो देने का दिन है। पूरा दिन बधाई देने वालों का ताता लगा। दोस्त, नातेदार, हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, जो भी दोस्तों में शामिल थे, आते रहे।"

कितने ही बुरे दौर आये चाहे सिकंदर बुतशिकन के द्वारा हिन्दुओं और उनके धर्म को नष्ट करना हो या अफगानों की बर्बरता का युग। लेकिन जैनुल आबदीन (बड़शाह) तो कभी तेगबहादुर और महाराजा रणजीत सिंह जैसे धर्म के रक्षकों ने यहां की आवाम की रक्षा की और वहाँ की संस्कृति को बचाए रखने का प्रयास किया। तभी तो वहाँ के लोग अलग-अलग धर्म के होते हुए भी मैत्री भाव और समन्वय की लोक संस्कृति में रचे-बसे जीते रहे । यही उनकी कश्मीरियत है जिस पर पूरा कश्मीर गर्व करता है- "ताता ने गर्व से जोड़ दिया कि शिवरात्रि ठेठ हिन्दू पर्व होते हुए भी अपनी वादी में हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों का मिला जुला महापर्व बन गया है। कभी शायद यह मज़बूरी रही हो, पर डोगरा राज्य में भी हमने 'सुन्नीपुतल', 'वागरबाह' की पूजा बरकरार रखी, यह हमारी धार्मिक सहिष्णुता का प्रमाण है और यही हमारी कश्मीरियत है|"[2]

विचार-विमर्श

देश को आजादी मिलने से पहले तक शासन द्वारा जनता पर जो ज्यादतियां हुई, चाहे वह कोई भी काल-खण्ड हो उसमें कश्मीरियों ने कभी सहयोग नहीं दिया। भारत विभाजन के समय देश के विभिन्न भागों में जहाँ हिन्दू-मुस्लिम थे वहाँ सांप्रदायिक दंगों में दोनों धर्मो के लोग मारे गए। उस प्रतिकूल समय में भी कश्मीर की जनता ने धार्मिक सहिष्णुता का परिचय दिया और विकट परिस्थितियों में एक दूसरे का सहारा बने। कश्मीरी आवाम ने भारत वर्ष के सामने कश्मीरियत की मिसाल पेश की जिसकी प्रशंसा करते हुए महात्मा गाँधी ने कहा था- "जब हिन्दुस्तान में चारों तरफ अँधेरा छाया हुआ है। तब सिर्फ कश्मीर ही अकेली उम्मीद बची है।" गांधी ने सच ही कहा था क्योंकि उस संकटपूर्ण समय में देश के अन्य भागों में दोनों समुदायों (हिन्दू -मुसलमान) के बीच अविश्वास उत्पन्न हो चुका था और दोनों धर्मों के लोग एक-दूसरे को अपना दुश्मन समझने लगे थे। परन्तु कश्मीर में दोनों कौम के लोग शांति के साथ रहते चले आये। इन्होंने कबाइली हमले के वक्त भी आपसदारी निभाई।

यह वही भूमि है जहाँ से जिन्ना को उलटे पाँव लौटना पड़ा था । जब उन्होंने मुसलमानों को खुदा का वास्ता देकर एक कलमा और एक झंडे के नीचे आने की बात की । इसके पीछे वही कश्मीरियत थी जो यहां के जन-जीवन में दिखाई पड़ती है। हिन्दू, शैव, बौद्ध और मुस्लिम धर्मों की तहजीब को निभाने वाली इस संस्कृति और समाज ने सियासत और बर्बर ताकतों का जितना दंश सहा है, उतना शायद ही कही देश के अन्य भागों में सहा गया होगा। यहाँ का समाज सबसे अधिक धर्मनिरपेक्ष समाज रहा है, इसका प्रमाण कश्मीर के सामाजिक संरचना में मौजूद है। कश्मीर के लोकविश्वास और यहां के व्रत, पर्व, त्यौहार, इनको मनाने के तौर-तरीके के साथ ही रहन-सहन, वेशभूषा में भी उस सांझी संस्कृति का परिचय मिलता है जिसे कश्मीरियत कहा जाता है। 'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास में चन्द्रकान्ता लिखती हैं- "ब्राह्मण वर्ग ही नहीं अनवर मियाँ, मौलवी साहब, गुलाम नबी आदि भी सदियों से चले आते विश्वास में दरार बरदाश्त नहीं कर सकते थे। हिन्दू-मुसलमान दोनों की दृष्टि में जो एकरूपता थी, उसका कारण मास्टरजी वादी के इतिहास में खोजते हैं। वे कहते हैं, 'चौदहवीं शदी से पहले तो वादी में हिन्दूधर्म, बौद्धधर्म व शैव मत प्रचलित थे । इस्लाम के आगमन पर हिन्दुओं का मत-परिवर्तन कर उन्हें मुसलमान बनाया गया । यों दोनों में कोई मूल भेद नहीं है, तभी तो खान-पान, रहन-सहन, लगभग एक जैसा है और कहीं-कहीं तो दोनों ईश्वराधना भी एक ही जगह करते हैं, शाहे-हमदान और काली देवी का मंदिर क्या एक ही जगह पर स्थित नहीं है?'"[3]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.111116 |

कश्मीर में सांझी संस्कृति को बनाये रखने में वहाँ के भौगोलिक और स्थापत्य कलाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है क्योंकि भौगोलिक परिस्थितियां भी संस्कृति के विकास में अपनी भूमिका निभाती है। स्थापत्य कलाओं में मार्तण्ड मंदिर कश्मीरियत का परिचय देता है तो हारी पर्वत भौगोलिक रूप से धार्मिक और सामाजिक सौहार्द का प्रतीक है, जहाँ अलग-अलग धर्म समूह के लोग एकत्रित होते हैं, "झील डल से गुजरते हुए एक तरफ हारी पर्वत दिखाई पड़ता, दूसरी तरफ शंकराचार्य पर्वत। यों तो अनवर मियाँ हारी पर्वत की मस्जिद में नमाज के लिए कभी-कभी जाते थे महीप भी गुरूद्वारे में मत्था टेकने जाता। हारी पर्वत पर मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा तीनों बने हैं......।"

परिणाम

कश्मीर के अनेक मुस्लिम परिवारों की वंशावली की हिन्दू पृष्ठभूमि है। अनेक परिवारों के आपस में रिश्ते हैं, अंतर्धर्मीय शादियाँ भले अधिक न होती रही हों परन्तु पारिवारिक उत्सवों, प्रतिभोजों, समारोहों एवं अन्य संस्कारों में दोनों समुदाय के लोग शामिल होते रहे हैं। चन्द्रकान्ता अपने उपन्यास 'कथा सतीसर' में 'दोदु मोज्य' परम्परा का उल्लेख करती हैं जिसमें मुसलमान स्त्रियाँ हिन्दू बच्चों को अपना दूध पिलाकर 'दोदु मोज्य' कहलाती थीं। यह परम्परा भारतवर्ष के अन्य भागों में दृष्टिगोचर नहीं होती। यह परम्परा कश्मीर में सामाजिक सद्भावना का अनमोल उदाहरण है। जहाँ दीन-धर्म आड़े नहीं आता मुस्लिम स्त्रियाँ हिन्दू बच्चों की जीवन दायनी माँ बन जाती हैं। "सनातनधर्मी कौल भी सोचते हैं कि कभी सुभान भट्ट और गुलाम मुहम्मद पंडित उनके ही हमजात रहे होंगे। सिकंदर बुतशिकन और अफगान तुर्कों के जुल्मोसितम से धर्म बदलने पर मजबूर हो गए, पर थे तो उन्हीं के भाई-बंद।

हिंदी को खुद अपनाकर, देश के कोनेकोने में इसे अपनाने के लिए लोगों को प्रेरणा दी। हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा जीवन गुजार देने वाली लेखिका मूलरूप से कश्मीर से ताल्लुक रखती हैं। वह अब तक करीब 200 कहानियां, 30 उपन्यास और 35 से अधिक कविताएं के जरिए समाज को जागरूकता का संदेश दे चुकी हैं। आठवें दशक की दहलीज पर कदम रखने वाली लेखिका हिंदी भाषा के संवर्धन के लिए काम करने से अब भी गुरेज नहीं करती है। गुरुग्राम में तीस वर्षों से हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास कर चुकी हैं। इस कार्य के लिए उन्हें दर्जनों सम्मान भी मिल चुके हैं। जिस उम्र में बच्चे गुड्डे-गुड़ियों से खेलते हैं उस उम्र लेखिका चंद्रकांता ने कलम-दवात को अपना खिलौना और लेखनी को अपना खेल बना लिया था। [4]

निष्कर्ष

बचपन से लेखन विद्या में गहरी रुचि की वजह घर का परिवेश था। पिता प्रो. रामचंद्र पंडित यूं तो बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाते थे, लेकिर्न हिंदी के प्रचारक थे। पिता को कश्मीर में हिंदी भाषा को बचाने के लिए मुहिम चलाते देखकर उनके मन राष्ट्रभाषा के लिए सम्मान जागा और वे भी पिता की इस मुहिम में जुट गईं। हिंदी से एमए करने के बाद राजस्थान, हैदराबाद, उत्तर प्रदेश और हरियाणा सहित कई राज्यों भाषा को बचाने के लिए संस्थाएं बनाईं। हिंदी भाषा के प्रति उनका मोह इस कदर बढ़ता चला गया कि उन्होंने कई किताबें, कहानियां, कविताएं व उपन्यास लिखें। कभी नारी मन की व्यथा तो किसी में स्त्री विमर्श की जटिलताएं, कभी सामयिक व्यवस्था के विद्रूप तो कभी संबंधों के विघटन जैसे मुद्दों को अपनी लेखनी का केंद्र बनाया। इसके साथ ही वर्तमान में तकनीक की बढ़ती घुसपैठ के बीच जीवन मूल्यों को बचाए रखने का संदेश भी अपनी रचनाओं के जरिए समाज को लगातार देती रहती हैं।

अंतिम साक्ष्य एवं अथांतर, बाकी सब खैरियत है, ऐलान गली जिंदा है, अपनेअपने कोणार्क, यहां वितस्ता बहती है, कथा सतीसर, हाशिए की इबारतें (आत्मकथात्मक संस्करण) सहित अन्य रचनाओं के लिए पाठकों ने जमकर सराहना की। लेखिका कहती हैं कि हिंदी लोक व्यवहार की भाषा है, देश की संस्कृति की संवाहिका है व राष्ट्रीय अस्मिता की द्योतक है। आज भले ही अंग्रेजी दुनिया से जोड़ती है, लेकिर्न हिंदी देश की पहचान बनाती है। ऐसे में युवाओं को अंग्रेजी के साथ ही हिंदी को भी अपनाना चाहिए। संचार क्रांति के इस दौर में हिंदी की पहचान व पैठ लोगों के बीच बढ़ी है। लेकिन हिंदी का रोमन तरीके से लिखा जाना मुझे बिल्कुल नहीं भाता है।[4]

संदर्भ

1. Eminent novelist Chandrakanta has been awarded the 2005 Vyas Samman for Katha Satisar Archived 2012-02-05 at the Wayback Machine ट्रिब्यून इण्डिया
2. Chandrakanta writer detailed book
3. Chandrakanta –a renowned hindi novelist
4. Chandrakanta- deserving women writers in India

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi crossref

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

Scan to save the contact details